# मुस्लिम भक्त कवियों का सांस्कृतिक समन्वय

*डॉ. आर.पी. वर्मा,*
*एसो. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,*
*राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,*
*जनपद–उन्नाव, उ.प्र.*

भारतवर्ष धर्म–दर्शन और संस्कार–संस्कृति के महिमामण्डित स्वरूप के आधार पर विश्व में अग्रणी रहा है। इनमें संस्कार की सबल भूमिका होती है। आचार–विचार का परिष्कार ही संस्कार का मुख्य लक्ष्य होता है। इसीलिए संस्कार का शाब्दिक अर्थ है– संशोधन, शुद्ध ओर परिष्करण। संस्कार मनुष्य को विकृति से मुक्त कर संस्कृति को और गतिशील करता है। संस्कृति का मूल उद्देश्य मानवता है। संस्कृति को जब देश–विदेश की उप मानने लगते हैं, तब संस्कृति को देश विशेष के विचारों की उपज मानते हैं।

हिन्दी साहित्य–संसार में भक्ति साहित्य का अपना विशष महत्व ह। भक्तिकालीन विविध विशेषताओं के साथ समन्वय की उपयोगी भावधारा के आधार पर भक्तिकाल को स्वर्णयुग की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। सामान्य लोगों की धारणा रही है कि भक्ति काल हिंदू नवजागरण काल है। वास्तव में ऐसा नहीं है। भक्तिकाल समस्त मानव के जागरण का आकर्षक काल है। भक्ति काल का बीच मंत्र रहा है कि मनुष्य ही नहीं सृष्टि के समस्त चर–अचर का नियंता ईश्वर है। वह सर्वशक्तिमान सर्वव्यापी और अजर–अमर है। उसके प्रति भक्ति भाव रखकर मानव मूल्यों को विकसित करना मानव धर्म है। यहांह तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार मुसलमान शासक या हिंदू प्रजा की कहीं चर्चा नहीं है। यहां हिन्दू–मुसलमान का भेदभाव नहीं है। भक्ति के धरातल पर पहुंच कर हिन्दू, हिन्दू नहीं रह जाता है, मुसलमान, मुसलमान नहीं रह जाता है।

**" जाति पांति पूछे नहि कोई।**

**हरि का भले सो हरि का होई।"**

भक्तिकालीन काव्य की सर्वप्रमुख विशेषता है–ससीम का असीम रूप में दर्शन, व्यष्टि का समष्टि के रूप में दर्शन और जन सामान्य में असाधारण या अलौकिक का दर्शन। इसी दिव्य दर्शन के ही समान बोलियों में दिव्य रचनाएं प्रस्तुत कर भक्त कवियों ने उन्हें भाषा के रूप में प्रतिष्ठत किया है। आज भी ब्रज भाषा, अवधी भाषा कहते हैं, न कि ब्रज बोली, अवधी बोली। भक्त कवियों ने भाषा–समन्वय के आधार पर विविध भावात्मक समन्वय करने का सबल प्रयास किया है। यह निर्विवाद सत्य है कि भाषा, संस्कृति की संवाहिका है। भाषा के सहज स्वरूप में सांस्कृतिक विकास और समन्वय देख सकते हैं।

रहीम युगधर्म के साथ चलने वाले सफल साहित्यकार थे। उन्होंने अपनी आस–पास की भाषा को अपनाकर जन सामान्य से सुखद संवाद किया है। उन्हें हिन्दी के साथ अरबी फारसी तुर्की और संस्कृत पर पूर्ण अधिकार प्राप्त था। उन्होंने अवधी, ब्रज और कौरवी आदि बोलियों के शब्दों का समन्वित रूप में प्रयोग किया है। रहीम की समन्वित भाषा में सुंदर सांस्कृतिक समन्वय है। मुसलमान परिवार में जन्मे रहीम ने संस्कृत के श्लोकों में लक्ष्मी, जगदीश्वर और राधा के संदर्भ

से आकर्षक सांस्कृति समन्वय किया है। कवि ने सर्वशक्तिमान ईश्वर के विषय में लिखा है–

**यद्यात्रया व्यापकता हता ते भिदैकता वाक्परता च स्तुल्या।**

**ध्यानेन बुद्धेः परतः परेशं जात्याज जता क्षन्तुमिहार्हसि त्वं।।।**

रहीम ने यहाँ समन्वित और विस्तृत चिंतन आधार पर कहा है–मैंने यात्रा करके आपकी व्यापकता, भेद से एकता, स्तुति से वाक्परता, ध्यान करके आपका बुद्धि से परे होना और जाति निश्चयन से आपके अजातिपन को बाधित किया है, इसलिए हे परमेश्वर इन अपराधों के लिए क्षमा करें।

मनुष्य सौन्दर्य प्रेमी है। सौंदर्य से आकर्षित होना उसकी सहज प्रवृत्ति है। ऐसे भाव को रहीम ने संस्कृत–हिन्दी समन्वित भाषा में व्यक्त करने का सुंदर प्रयास किया है।

**एकस्मिन्दिवसावानसमये, मैं था गया बाग में।**

**काचितत्र कुरंगबालनयना, गुल तोड़ती थी खड़ी।।**

**तां दृष्टवा नवयौवनां शशिमुखी, मैं मोह में जा पड़ा।**

**नो जीवामि त्वया बिना श्रुणु प्रिये, तू यार कैसे मिलो।।**

रहीम ने सरल भाषा में मनुष्य की सम और विषम मानसिकता का एक साथ चित्रण किया है। विषम प्रकृति की गतिविधियों से सहज व्यक्ति घायल हो जाता है।

भारतीय मान्यता में स्वर्ग और कल्पवृक्ष दिव्य लोक की चीजें हैं। जन–मन में इसे पाने की अनूठी इच्छा दिखाई देती है। सहृदय कवि रहीम ने तद्भव बहुल शब्दावली में समय और परिस्थिति के अनुसार हर एक वस्तु की मान्यता के बदलते रहने की बात कही है।

**काह करौं बैकुंठ लै, कल्प वृक्ष की छांह।**

**रहिमन दाख सुहावनों, जों गल पीतम बांह।।**

रहीमदास ने समस्त मानवों को एक परिवार के सदस्य के रूप में देखा है। उनकी दृष्टि में प्रत्येक कर्मयोगी–भक्त को जीवन में सफल होना चाहिए। स्वाभिमान और आत्म–सम्मान जगाने का आकर्षक भाव कवि ने व्यक्त किया है–

**कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भी धीम।**

**केहि की प्रभुता नहिं घटी, पर घर गए रहीम।।**

कवि ने हिन्दू धर्म में आराध्य मर्यादा पुरूषोत्तम राम की व्यथा–कथा का उल्लेख करते हुए संस्कारित जीवन में भी सुख – दुःख के आवागमन का संकेत किया है।

**चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध–नरेस।**

**जो पै विपदा पड़त है, सो आवत यहि देस।।**

पौराणिक संदर्भ में सांस्कृतिक आदर्श के समाजोपयोगी रूप का चित्रण अनुपम है। यह एक ऐसी सुसंस्कृत भावधारा है, जो मनुष्य की गुरूता को अधिक गुरूतर बना देती है। यह संस्कारित रूप देने का सबल आधार है–

**छिमा बड़न को चाहिए, छोटेन को उत्पात।**

**का रहीम हरि को घट्यों जो मृगु मारी लात।।**

मुस्लिम परिवार में जन्म लेकर कवि ने हिन्दू–मुसलमान को नीली छतरी के नीचे एक समन्वित सांस्कृतिक धारा में गतिशील रहने की प्रेरणा दी है। उन्होंने कहीं पर खुदा को याद किया है, तो कहीं पर राम अथवा कृष्ण को।

**जे गरीब पर हित करै, ते रहीम बड़ लोग।**

**कहा सुदामा बापुरों कृष्ण मिताई जोग।।**

रहीम ने स्पष्ट किया है कि मन की पवित्रता और भक्तिभाव के प्रभाव में व्यक्ति को चारों ओर ईश्वर ही नजर आते हैं। आत्मा के सतत प्रयत्न में ईश्वर मिलन की प्रबल कामना होती है। भक्ति के धरातल पर मानवीय मूल्य जगाने के लिए भारतीय संदर्भ और समन्वित चिन्तन अपनाया गया है–

**धूर धरत नित सीस पै, कहु रहीम केहि काज।**

**जेहि रज मुनि पत्नी तरी, सो ढूढ़त गजरात।।**

पौराणिक संदर्भों में उभरता हुआ आकर्षक सांस्कृतिक स्वरूप कवि के काव्य की अपनी विशेषता है। तद्भव शब्दावली में तत्सम शब्दावली का मणिकांचन योग सांस्कृतिक समन्वय को मुखर स्वर प्रदान करता है।

**मान सहित विष खाय के, संभु भये जगदीश।**

**बिना मान अमृत पिये, राहु कटायो सीस।।**

रहीम ने हिन्दू–मुसलमान में भावात्मक एकता प्रसार हेतु श्याम को अपने आराध्य के रूप में स्वीकार किया। वे मुरलीधर की विभिन्न मुद्रा को हृदयगंम कर मस्त रहना चाहते हैं। यह सत्य है कि मन की एकाग्रता और समरसता में सांस्कृतिक समन्वय का आदर्श रूप उभरता है। कहा जाता है कि रहीम गोबिन्द के दर्शनार्थ वृन्दावन गए। उन्हें मंदिर में प्रवेश नहीं मिला, तो मंदिर के सामने बैठ गए। उन्होंने दो पद गाकर, गोविन्द को अर्पित किए। गोविन्द प्रसन्न होकर प्रकट हुए और अपने हाथ से उन्हें प्रसाद दिया था। उनमें एक पद यह है–

**कमल–दल नैननि की उनमानि।**

**बिसरत नाहिं सखी मो मनते मंद–मंद मुसकानि।**

**यह दसननि दुति चपला हूते महा चपल चमकानि।।**

.....

**अब 'रहीम' चित ते न टरति है सकल स्याम की बानि।।**

डॉ0 विद्यानिवास मिश्र ने जनमन को प्रेरित करने वाले समन्वयवादी मुस्लिम कवि रहीम के विषय में अपना विचार इस प्रकार व्यक्त किया है–

''इन्होंने मजहब से ऊपर उठकर मानव भाव को परखा है और दरबारी परिवेश में पले होकर भी जनजीवन में ये पगे हुए हैं।''

रहीम के व्यक्तित्व में सांस्कृतिक समन्वय का सुंदर साक्षात्कार होता है। उन्होंने राजसी ठाटबाट को फकीरी से जोड़ा है। यह सच है कि वे अरबी–फारसी भाषा–भाषी परिवेश के मुसलमान परिवार में जन्में, उनका अंतिम संस्कार भी मुस्लिम रीति–रिवाज से हुआ, उन्होंने अपना धर्म परिवर्तन नहीं किया, कर्म में कोई बदलाव नहीं आने दिया, किंतु वे सांस्कृतिक समन्वय के मनोहारी आधार पर बढ़ते रहे हैं।

रहीम ने समन्वित भावधारा में गतिशील रहने वाले, मानवतावादी मनुष्य को सर्वाधिक महत्व दिया है। ऐसे सुजन की गतिविधियों में मानवता के सुंदर विकास की संभावना व्यक्त की है। उन्होंने ऊँच–नीच, हिन्दू–मुसलमान, गरीब–अमीर आदि के भेदों को दूर–दूर बहुत दूर रहकर सुंदर समन्वित सांस्कृतिक परिवेश बनाने के लिए आह्वान किया है–

**टूटे सुजन मनाइये, जो टूटे सौ बार।**

**रहिमन फिर–फिर पोइये, टूटे मुक्ताहार।।**

नीति वाक्यों के लिए प्रसिद्ध रहीम के काव्य में विविध भावों के साथ सांस्कृतिक समन्वय की सुरसरि प्रवाहित होती है।

सूफी काव्य में सांस्कृतिक समन्वय का आकर्षक और स्पष्ट स्वरूप प्रकट हुआ है।

सुफीमत मूलतः इस्लाम से प्रसूत है। इसमें हजरत मुहम्मद और कुरान को महत्व दिया गया है। कालांतर में उदारवादी, जनकल्याणकारी विचार अपनाने से इसमें अन्य मतों की समुचित स्थान मिल गया है। उदारवादी दृष्टिकोण ही समन्वय का सर्वाधिक उपयोगी आधार होता है। सूफी काव्य की समन्वयवादी दृष्टि से इसे अनुकूल और सराहनीय ख्याति मिली है। समाज में जब हिंदू–मुसलमान, शासक और शासित के मध्य खींच–तान और संघर्ष से दूरी बढ़ रही थी, तब सूफी काव्य की समन्वय भावना इसके विपरीत जन–जन के दिलों की धड़कन को समरस बनाने की भूमिका निभा रही थी। जब धर्मांध शासक की क्रूरता और धर्म–परिवर्तन का जहर समाज को अंधकार के वातावरण में धकेल रहा था, तब प्रेमाश्रयी काव्य अपने उदार, सहिष्णु और संवेदनशील विचारों से भारतीयों को अनुप्राणित कर रहा था। सूफी कवियों ने लोकभाषा में जीवनोपयोगी भाव समन्वित काव्य रचना का मनोहारी प्रयास किया है।

भारतीय संस्कृति की सबल गौरव गाथा है– समस्त जड़–चेतन प्रकृति के साथ एकात्मक भाव। इसी परम भाव–प्रभाव से समस्त प्राणियों को आत्मबल समझा जाता है। सब के प्रति सहानुभूति उत्पन्न हो जाती है। इसी दृष्टिकोण से भारतीय संस्कृति के आधार सत्य, अहिंसा, दया, ममता, सहिष्णुता और विश्वबंधुत्व का विकास हुआ है। सूफी काव्य में इन मूल्यों को गंभीरता से अपनाया गया है।

सूफी काव्य में सृष्टि निर्माता–ईश्वर के प्रति आकर्षक आस्था है। जायसी का पद्मावत मसनवी शैली की श्रेष्ठ रचना है। इसमें मुस्लिम एकेश्वरवाद की स्पष्ट छाया है। मुसलमान सृष्टि की रचना में चार तत्वों (अनासिर अरबआ)–अग्नि, पवन, जल और मिट्टी को ही महत्व देते हैं। ईश्वर–स्तुति में लगभग भारतीय पद्धति ही है। पद्मावत के स्तुति खंड की पंक्तियां उद्धरणीय हैं।

**''संवरौ आदि एक करतारू। जेहँ जिउ दीन्ह कीन्ह संसारू।**

**.....**

**.....**

**कोन्हेस दिन दिनअर ससि राती, कीन्हेसि नखत तराइन पांती।**

**कीन्हेसि धूप सीउ और छाहाँ, कीन्हेसि मेघ बीजु तेहि माहाँ।**

**कीन्ह सबइ उस जाकर दोसरहिं छाजन काहु**

**पहिलेहि तेहिक नाउँ लइ कथा कहौं अवगाहु।।''**

सूफी काव्य में प्रयुक्त भारतीय कथाओं के प्रवाह में भारतीय देवों के नाम यत्र–तत्र लिए गए हैं। जायसी ने ईश्वर के साथ विभिन्न योनियों में उत्पन्न जीवों की चर्चा की है। उन्होंने हिंदू धर्म में वर्णित विविध (चौरासी लाख) योनियों के स्थान पर इस्लाम में वर्णित विविध (अट्टारह हजार) जीवों के संदर्भ को अपनाया है–

**कीन्हेसि राकस भूत परेता कीन्हेसि भोकस देव दयंता।**

**कीन्हेसि सहस अठारह बरन बरन उपरासि।**

**भुगुति दिहेसि पुनि सब कहँ सकल साजना साजि।।**

इस्लाम धर्म में पैगंबर मुहम्मद की उत्पत्ति कुरान के कल्मे के अनुसार मानी गई है। जायसी ने कुरान के स्थान पर 'पुरान' शब्द का प्रयोग कर सुंदर सांस्कृतिक समन्वय करने का प्रयास किया है।

**कीन्हेसि पुरूष एक निरमरा। नाउँ मुहम्मद पूनिउँ करा।**

**प्रथम जोति बिधि तेहि कै साजी। औ तेहि प्रीति सिस्ट उपराजी।।**

**.....**

**.....।।**

**जो पुरान विधि पठवा सोइ पढ़त गिरंथ।**

**अउर जो भूले आवत ते मुनि लागत तेहि पंथ।।**

सूफी साधना में गुरू को विशेष महत्व दिया गया है। प्राचीन भारतीय धारणा के अनुसार मुख्यतः शिष्य अपने गुरू के प्रति श्रद्धा और भक्ति ही नहीं रखता था, वरन् अपने कर्त्तव्य का तत्परता से पालन करता था। शिष्य अपने गुरू को पिता तुल्य अथवा जीवन के पथ–प्रदर्शक रूप में सम्मान देता था। सूफी काव्य–साधना में गुरू को कुछ और भी, पिता पथ–प्रदर्शक (मुर्शिद पीर) के साथ देव रूप में भी स्थान दिया गया है। गुरू में देवत्व दर्शन के साथ ही विकसित भाव शिष्य में ईश्वरत्त्व जगाया और गुरू गोविन्द में अभेद रूप सामने आ गया। सूफी काव्य की गुरू भक्ति भारतीय मान्यता के समान हो गई–

**गुरूः ब्रह्मा गुरूः विष्णु गुरूः देवों महेश्वरः।**

**गुरूः साक्षत् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरूवे नमः।।**

गुरू–महिमा का गान करते हुए जायसी थकते

*Copyright © 2018, Dr. R.P.Verma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*